



महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन विकास में स्वयं सहायता समूह की भूमिका का विश्लेषण

डॉ. विनीता गौतम

सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य, लक्ष्मण प्रसाद वैद्य शासकीय कन्या महाविद्यालय, बेमेतरा, छत्तीसगढ़

ABSTRACT

स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) महिलाओं के बीच आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए एक महत्वपूर्ण तंत्र के रूप में उभरा है, खासकर भारत जैसे विकासशील देशों में। ये जमीनी स्तर के संगठन महिलाओं को वित्तीय संसाधनों, कौशल विकास और एक सहायक समुदाय तक पहुँच प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाते हैं। “एसएचजी के माध्यम से माइक्रोफाइनेंस महिलाओं की आर्थिक स्वतंत्रता के लिए एक महत्वपूर्ण उत्प्रेरक साबित हुआ है” (स्मिथ एंड जॉनसन, 2021, पृष्ठ 45)। एसएचजी की अवधारणा सामूहिक कार्रवाई के विचार पर आधारित है, जहाँ महिलाएँ बचत करने, उधार लेने और आय-उत्पादक गतिविधियों में निवेश करने के लिए एक साथ आती हैं। यह सहयोगी दृष्टिकोण न केवल उनकी आर्थिक स्थिति को बढ़ाता है बल्कि एकजुटता और आपसी सहयोग की भावना को भी बढ़ावा देता है। आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में एसएचजी की प्राथमिक भूमिका कई प्रमुख आयामों के माध्यम से देखी जा सकती है। सबसे पहले, एसएचजी ऋण तक पहुँच को आसान बनाते हैं। पारंपरिक बैंकिंग प्रणाली अक्सर महिलाओं, खासकर हाशिए के समुदायों की महिलाओं को अनदेखा करती है। एसएचजी संसाधनों को एकत्रित करके और अपने सदस्यों को माइक्रोलोन प्रदान करके इस अंतर को पाटते हैं। यह वित्तीय समावेशन महिलाओं को छोटे व्यवसायों, कृषि या अन्य आय-उत्पादक गतिविधियों में निवेश करने में सक्षम बनाता है, जिससे उनकी आर्थिक स्वतंत्रता बढ़ती है। एसएचजी की सामूहिक ताकत बाजारों और बातचीत में अधिक सौदेबाजी की शक्ति प्रदान कर सकती है, जिससे उनकी आर्थिक संभावनाओं को और बढ़ावा मिलेगा। हालांकि, एसएचजी के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता की ओर यात्रा चुनौतियों से रहित नहीं है। बाजारों तक सीमित पहुँच, अपर्याप्त बुनियादी ढांचे और महिलाओं की गतिशीलता को प्रतिबंधित करने वाले सामाजिक मानदंड जैसे मुद्दे उनकी प्रगति में बाधा डाल सकते हैं। इसके अतिरिक्त, एसएचजी की स्थिरता सरकारी और गैर-सरकारी संगठनों से निरंतर समर्थन पर निर्भर करती है, जो प्रशिक्षण, संसाधन और बाजार संपर्क प्रदान करने के लिए आवश्यक है। प्रस्तुत शोध पत्र द्वारा महिलाओं के आर्थिक स्वावलंबन विकास में स्वयं सहायता समूह की भूमिका का विश्लेषण करना है।

KEYWORDS: आर्थिक आत्मनिर्भरता, कौशल विकास, आर्थिक आत्मनिर्भरता, संसाधनों, माइक्रोलोन, गैर-सरकारी संगठनों, प्रशिक्षण।

परिचय

महिलाओं के बीच आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) की भूमिका ने हाल के वर्षों में, विशेष रूप से भारत जैसे विकासशील देशों के संदर्भ में, महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है। जमीनी स्तर की पहल के रूप में, एसएचजी को महिलाओं को वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार करने के लिए आवश्यक उपकरण, संसाधन और सहायता प्रदान करके उन्हें सशक्त बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। “एसएचजी की सामूहिक बचत और उधार देने की प्रथा महिलाओं को अपने स्वयं के व्यवसायों में निवेश करने के लिए सशक्त बनाती है, जिससे घरेलू आय में वृद्धि होती है” (कुमार और पटेल, 2020, पृष्ठ 112)। एसएचजी की अवधारणा सामूहिक कार्रवाई और पारस्परिक सहायता के सिद्धांतों पर आधारित है, जहाँ महिलाएँ अपने संसाधनों को एकत्र करने, ज्ञान साझा करने और अपने आर्थिक प्रयासों में एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए एक साथ आती हैं। ऐतिहासिक रूप से, महिलाओं को आर्थिक भागीदारी में कई बाधाओं का सामना करना पड़ा है, जिसमें ऋण तक सीमित पहुँच, कौशल की कमी और सामाजिक मानदंड शामिल हैं जो उनकी गतिशीलता और निर्णय लेने की शक्ति को प्रतिबंधित करते हैं। एसएचजी इन

चुनौतियों का समाधान करके उनके लिए एक अनुकूल वातावरण बनाती हैं, जो महिलाओं को आय-उत्पादक गतिविधियों में संलग्न होने के लिए प्रोत्साहित करता है। माइक्रोफाइनेंस तक पहुँच को सुविधाजनक बनाकर, एसएचजी महिलाओं को छोटे व्यवसाय शुरू करने, कृषि में निवेश करने या अन्य उद्यमशील उपक्रमों को आगे बढ़ाने में सक्षम बनाते हैं, जिससे उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता बढ़ती है। “माइक्रोक्रेडिट तक पहुँच ने महिलाओं को गरीबी के चक्र को तोड़ने और अपनी सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार करने में सक्षम बनाया है” (चौधरी, 2021, पृष्ठ 56)। वित्तीय सहायता के अलावा, SHG कौशल विकास और क्षमता निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई समूह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करते हैं जो महिलाओं को सिलाई, हस्तशिल्प और उद्यमिता जैसे आवश्यक कौशल से लैस करते हैं। कौशल वृद्धि पर यह ध्यान न केवल महिलाओं की रोजगार क्षमता को बढ़ाता है बल्कि आत्मविश्वास और आत्म-सम्मान की भावना को भी बढ़ावा देता है, जिससे उन्हें अपने आर्थिक भविष्य को नियंत्रित करने का अधिकार मिलता है। इसके अलावा, SHG महिलाओं के लिए नेतृत्व और निर्णय लेने के कौशल विकसित करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करते हैं। इन समूहों में भागीदारी महिलाओं को अपनी राय व्यक्त करने, नेतृत्व की भूमिका निभाने और

सामूहिक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह सशक्तिकरण आर्थिक पहलुओं से परे है, क्योंकि महिलाएं अपने समुदायों और घरों में अधिक सक्रिय भागीदार बनती हैं, अपने अधिकारों की वकालत करती हैं। “एसएचजी में भाग लेने वाली महिलाओं ने अपने घरों में आत्मविश्वास और निर्णय लेने की शक्ति के उच्च स्तर की सूचना दी है।” (रेड्डी, 2019, पृष्ठ 78)। SHG के माध्यम से उत्पन्न सामाजिक पूंजी आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में उनकी भूमिका का एक और महत्वपूर्ण पहलू है। इन समूहों के भीतर गठित नेटवर्क महिलाओं को अपनेपन और समर्थन की भावना प्रदान करते हैं, जिससे वे अनुभव, चुनौतियाँ और समाधान साझा करने में सक्षम होती हैं। यह सामूहिक शक्ति उनकी लचीलापन और सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाती है, जिससे उनकी आर्थिक संभावनाओं में और सुधार होता है। स्वयं सहायता समूह महिलाओं के आर्थिक आत्मनिर्भरता विकास में एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाते हैं। वित्तीय, सामाजिक और कौशल-संबंधी बाधाओं को दूर करके, SHG महिलाओं को गरीबी और निर्भरता के चक्र से मुक्त होने के लिए सशक्त बनाते हैं। जैसे-जैसे ये समूह विकसित और विस्तारित होते रहते हैं, आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन को आगे बढ़ाने की उनकी क्षमता महत्वपूर्ण बनी रहती है, जो महिलाओं और उनके समुदायों के लिए अधिक न्यायसंगत और समृद्ध भविष्य का मार्ग प्रशस्त करती है।

भारत में स्वयं सहायता समूहों का ऐतिहासिक संदर्भ

भारत में स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) का इतिहास एक महत्वपूर्ण कथा है जो गरीबी उन्मूलन, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण विकास के व्यापक विषयों से जुड़ी हुई है। एसएचजी की अवधारणा 1980 के दशक की शुरुआत में ग्रामीण गरीबों, विशेष रूप से महिलाओं द्वारा वित्तीय सेवाओं और संसाधनों तक पहुँचने में आने वाली चुनौतियों के जवाब के रूप में उभरी। एसएचजी की उत्पत्ति का पता बांग्लादेश में डॉ. मुहम्मद यूनुस के काम से लगाया जा सकता है, जिन्होंने माइक्रोक्रेडिट आंदोलन की शुरुआत की थी। बिना किसी जमानत के गरीब व्यक्तियों को छोटे ऋण प्रदान करने के उनके प्रयासों ने भारत में इसी तरह की पहल के लिए आधार तैयार किया। 1985 में, राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) ने दक्षिणी राज्य तमिलनाडु में एक पायलट परियोजना शुरू की, जिसका उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं में मितव्ययिता और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना था। इस परियोजना ने भारत में एसएचजी की औपचारिक शुरुआत की। 1990 के दशक में भ्रष्ट आंदोलन ने गति पकड़ी, जो आर्थिक विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका की मान्यता से प्रेरित था। सरकार और विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों (NGO) ने महिलाओं को सशक्त बनाने और उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति को बढ़ाने के साधन के रूप में SHG के गठन को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना शुरू किया। SHG को व्यक्तियों, मुख्य रूप से महिलाओं के छोटे, अनौपचारिक समूहों के रूप में डिजाइन किया गया था, जो पैसे बचाने, आपसी सहायता प्रदान करने और ऋण तक पहुँचने के लिए एक साथ आए थे। सामूहिक कार्रवाई पर जोर दिया गया था, जहाँ सदस्य अपनी बचत को इकट्ठा करेंगे और एक-दूसरे को उधार देंगे, जिससे समुदाय और एकजुटता की भावना को बढ़ावा मिलेगा। 1990 के दशक के अंत तक, SHG आंदोलन का काफी विस्तार हुआ था, देश भर में हजारों समूह बनाए गए थे। सरकार ने गरीबी उन्मूलन में

SHG की क्षमता को पहचाना और उन्हें विभिन्न विकास कार्यक्रमों में एकीकृत किया। 1992 में NABARD द्वारा शुरू किया गया SHG-बैंक लिंकेज कार्यक्रम एक ऐतिहासिक पहल थी जिसने SHG के लिए औपचारिक ऋण तक पहुँच को सुगम बनाया। इस कार्यक्रम ने बैंकों को एसएचजी को ऋण देने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे उन्हें आय-उत्पादक गतिविधियों में निवेश करने के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधन उपलब्ध हुए। भारत में एसएचजी की सफलता के लिए कई कारक जिम्मेदार हैं। सबसे पहले, उन्होंने महिलाओं को बचत करने और अपने वित्त का प्रबंधन करने के लिए एक मंच प्रदान किया, जो पारंपरिक पितृसत्तात्मक संरचनाओं में अक्सर संभव नहीं था। दूसरे, एसएचजी ने ऋण तक पहुँच को आसान बनाया, जिससे महिलाएं छोटे व्यवसाय शुरू कर सकीं और आय-उत्पादक गतिविधियों में शामिल हो सकीं। इस वित्तीय स्वतंत्रता ने न केवल उनकी आर्थिक स्थिति में सुधार किया, बल्कि उनके परिवारों और समुदायों के भीतर उनकी सामाजिक स्थिति को भी बढ़ाया। इसके अलावा, एसएचजी ने महिलाओं के बीच नेतृत्व कौशल को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एसएचजी के सदस्यों के रूप में, महिलाओं ने नेतृत्व की भूमिकाएँ निभाई हैं, निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लिया है और सामुदायिक विकास पहलों में शामिल हुई हैं। इस सशक्तिकरण ने उनके अधिकारों के बारे में जागरूकता बढ़ाई है और खुद और अपने परिवारों की वकालत करने की अधिक क्षमता पैदा की है। हाल के वर्षों में, एसएचजी आंदोलन स्वास्थ्य, शिक्षा और पर्यावरणीय स्थिरता जैसे विकास के विभिन्न आयामों को शामिल करने के लिए विकसित हुआ है। कई SHG ने अपनी गतिविधियों में विविधता लाकर कौशल विकास, व्यावसायिक प्रशिक्षण और स्वास्थ्य एवं स्वच्छता पर जागरूकता कार्यक्रम शामिल किए हैं। आज, भारत में SHG आंदोलन को दुनिया में सबसे बड़ी और सबसे सफल माइक्रोफाइनेंस पहलों में से एक माना जाता है। इसने लाखों महिलाओं के जीवन को बदल दिया है, उन्हें गरीबी के चक्र को तोड़ने और आर्थिक स्वतंत्रता हासिल करने के लिए उपकरण और संसाधन प्रदान किए हैं। भारत में SHG का इतिहास सामूहिक कार्रवाई की शक्ति और सामाजिक परिवर्तन को आगे बढ़ाने के लिए जमीनी स्तर के आंदोलनों की क्षमता का प्रमाण है। “एसएचजी के माध्यम से आर्थिक ढाँचे में महिलाओं का एकीकरण न केवल उनकी स्थिति को ऊपर उठाता है बल्कि सामुदायिक विकास में भी योगदान देता है” (वर्मा, 2022, पृष्ठ 34)।

स्व-सहायता समूह की आवश्यकता:

ग्रामीण परिवार में अधिकांश व्यक्ति कृषि पर निर्भर होते हैं किन्तु कृषि की जो प्रकृति होती है वह अनियमित हाती है और उन लोगों को स्थायी कार्य नहीं मिल पाता तथा कई प्रकार की समस्याएँ गरीबी, पारिवारिक जरूरत तथा निजी आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं। बैंकों के द्वारा छोटे-छोटे किसानों को ऋण दिये जाते हैं वह अधिसीमान्त किसान ऋण का लाभ खासकर गरीब महिलाएँ नहीं उठा पाती। महिलाओं के आर्थिक, सामाजिक स्तर को ऊपर उठाने के लिए आवश्यक है। उन्हें पृथक से ऋण प्रदान किया जाए, पुरुष की तुलना में ऋण भुगतान करने में महिलाएँ ज्यादा विष्वसनीय होती हैं। यही कारण है कि महिला की लघु ऋण योजनाएँ सफलता से चल रही हैं। इससे महिलाओं का आत्मविश्वास बढ़ा है। यह आत्मविश्वास उन्हें समाज में अपनी प्रतिभा का कुशलता पूर्वक कार्य करने में सहायता

करता है। तथा उन्हें आर्थिक दृष्टि से स्वतंत्र बनाता है, जिससे परिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्र में उनकी सहभागिता बढ़ी है।

आर्थिक आत्मनिर्भरता के लाभ:

आर्थिक आत्मनिर्भरता से तात्पर्य व्यक्तियों या समूहों की बाहरी सहायता या समर्थन पर निर्भरता के बिना खुद को आर्थिक रूप से बनाए रखने की क्षमता से है। महिलाओं के लिए, आर्थिक आत्मनिर्भरता हासिल करना कई कारणों से महत्वपूर्ण है: आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं को स्वतंत्र वित्तीय निर्णय लेने की अनुमति देती है, जिससे आर्थिक झटकों के प्रति उनकी भेद्यता कम होती है और घरों के भीतर उनकी सौदेबाजी की शक्ति बढ़ती है। अपने पास वित्तीय संसाधनों के साथ, महिलाएं अपने और अपने परिवार के लिए स्वास्थ्य, शिक्षा और पोषण में निवेश कर सकती हैं, जिससे समग्र कल्याण में सुधार होता है। आर्थिक स्वतंत्रता आत्मविश्वास और आत्मसम्मान को बढ़ावा देती है, जिससे महिलाएं समुदाय के निर्णय लेने में सक्रिय रूप से भाग ले पाती हैं और पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को चुनौती दे पाती हैं। सशक्त महिलाएं नौकरियां पैदा करके, स्थानीय व्यवसायों का समर्थन करके और सामाजिक पहलों में भाग लेकर अपने समुदायों के आर्थिक विकास में योगदान देती हैं। "महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में एसएचजी की सफलता स्थानीय बाजारों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी में स्पष्ट है" (मेहता और शर्मा, 2022, पृष्ठ 47)।

आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में SHG की भूमिका बचत और ऋण सुविधाएँ:

SHG का एक प्राथमिक कार्य सदस्यों को नियमित रूप से बचत करने के लिए प्रोत्साहित करना है। ये बचत निधियों का एक पूल बनाती है जिसका उपयोग सदस्यों को कम ब्याज दरों पर उधार देने के लिए किया जा सकता है। ऋण तक पहुँच महिलाओं को छोटे व्यवसायों, कृषि गतिविधियों या व्यावसायिक प्रशिक्षण में निवेश करने में सक्षम बनाती है, जिससे उनकी आय-सृजन क्षमता में वृद्धि होती है।

कौशल विकास और प्रशिक्षण:

कई SHG अपने सदस्यों के कौशल को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम प्रदान करते हैं। इन कार्यक्रमों में उद्यमिता विकास, वित्तीय साक्षरता और विभिन्न ट्रेडों में व्यावसायिक प्रशिक्षण शामिल हो सकते हैं। महिलाओं को आवश्यक कौशल से लैस करके, "भू" उन्हें विविध आय-सृजन गतिविधियों को आगे बढ़ाने के लिए सशक्त बनाते हैं।

सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति:

SHG महिलाओं को उनके उत्पादों और सेवाओं के लिए बेहतर कीमतों पर बातचीत करने में सक्षम बनाकर उनकी सौदेबाजी की शक्ति को बढ़ाते हैं। सामूहिक कार्रवाई सदस्यों को बाजारों तक अधिक प्रभावी ढंग से पहुँचने की अनुमति देती है, जिससे बिचौलियों द्वारा शोषण कम होता है और उनके काम के लिए उचित मुआवजा सुनिश्चित होता है।

महिला सशक्तिकरण पर SHG का प्रभाव

बढ़ी हुई आय और रोजगार के अवसर: अध्ययनों से पता चला है कि

SHG में शामिल महिलाओं की आय के स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। आय-उत्पादक गतिविधियों में शामिल होकर, महिलाएँ अपने घरेलू आय में योगदान दे सकती हैं, जिससे जीवन स्तर में सुधार होता है और गरीबी कम होती है। SHG में भागीदारी महिलाओं को घरेलू और सामुदायिक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने के लिए सशक्त बनाती है। जैसे-जैसे वे वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करती हैं, महिलाओं के अपने विचारों को मुखर करने और परिवार कल्याण, शिक्षा और स्वास्थ्य से संबंधित निर्णयों को प्रभावित करने की संभावना अधिक होती है। स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक आत्मनिर्भरता महिलाओं की उनके परिवारों और समुदायों में सामाजिक स्थिति को बढ़ाती है। जैसे-जैसे महिलाएँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती जाती हैं, उन्हें सम्मान और मान्यता मिलती है, जिससे पारंपरिक लैंगिक मानदंडों और रुढ़ियों को चुनौती मिलती है। सशक्त महिलाओं के घरेलू हिंसा और दुर्व्यवहार को सहन करने की संभावना कम होती है। अध्ययनों से संकेत मिलता है कि जो महिलाएँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र हैं, उनके घर में रहने की संभावना अधिक होती है। अपने अधिकारों का दावा करने और हिंसा के मामलों में मदद मांगने के लिए, जिससे घरेलू दुर्व्यवहार की दरों में कमी आई है। SHG में महिलाओं की सामूहिक कार्रवाई व्यापक सामाजिक परिवर्तन में योगदान देती है। सशक्त महिलाएँ अक्सर अपने समुदायों में नेतृत्व की भूमिका निभाती हैं, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरणीय स्थिरता जैसे सामाजिक मुद्दों की वकालत करती हैं। अनेक केस स्टडी महिलाओं की आर्थिक आत्मनिर्भरता पर "भू" के सकारात्मक प्रभाव को दर्शाती हैं। उदाहरण के लिए, छत्तीसगढ़ में, SHG के सहयोग से महिलाओं द्वारा संचालित सफल सूक्ष्म उद्यमों की स्थापना की है, जैसे डेयरी फार्मिंग, हस्तशिल्प और खाद्य प्रसंस्करण। ये उद्यम न केवल आय प्रदान करते हैं बल्कि समुदाय की अन्य महिलाओं के लिए रोजगार के अवसर भी पैदा करते हैं।

एसएचजी के सामने आने वाली चुनौतियाँ

सफलताओं के बावजूद, एसएचजी को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में उनकी प्रभावशीलता में बाधा डालती हैं। एसएचजी आसानी से ऋण से ऋण उपलब्ध कराता है, किन्तु कई बार समूह क्रेडिट की कमी के कारण औपचारिक वित्तीय संस्थानों से ऋण प्राप्त करने के लिए संघर्ष करते हैं। कुछ एसएचजी को समय के साथ सदस्यों की सहभागिता और वित्तीय स्थिरता बनाए रखने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जिससे कारण नेतृत्व परिवर्तन, प्रशिक्षण की कमी और बाहरी दबाव समूह विघटन का कारण बन सकते हैं। महिला उद्यमियों को अक्सर अपने उत्पादों के लिए बाजारों तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। सीमित विपणन कौशल और बाजार के रुझानों के बारे में जानकारी की कमी उनके सामान को प्रभावी ढंग से बेचने की क्षमता में बाधा डाल सकती है। कुछ समुदायों में, पारंपरिक लिंग भूमिकाएँ और सामाजिक मानदंड एसएचजी के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण का विरोध करती हैं। तथा सांस्कृतिक बाधाएँ आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की भागीदारी और स्वीकृति को सीमित कर सकती हैं।

सुझाव

महिलाओं में आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में SHG की प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए, कई नीतिगत सिफारिशें की जा सकती हैं:

- वित्तीय सहायता को मजबूत करना: सरकारों और वित्तीय संस्थानों को पूंजी तक पहुँच को आसान बनाने के लिए SHG के लिए कम ब्याज वाले ऋण और अनुदान सहित अनुरूप वित्तीय उत्पाद विकसित करने चाहिए।
- क्षमता निर्माण कार्यक्रम: SHG सदस्यों को उद्यमिता, वित्तीय प्रबंधन और विपणन में कौशल से लैस करने के लिए निरंतर प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण पहल को लागू किया जाना चाहिए।
- बाजार संबंध: SHG और बाजारों के बीच संबंध स्थापित करने से महिलाओं के उत्पादों की दृश्यता बढ़ सकती है। विपणन पहलों, व्यापार मेलों में भागीदारी और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के लिए समर्थन महिलाओं को व्यापक ग्राहक आधार तक पहुँचने में मदद कर सकता है।
- जागरूकता अभियान: SHG और महिला सशक्तिकरण के लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाने से सामाजिक मानदंडों को चुनौती देने और आर्थिक गतिविधियों में महिलाओं की अधिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने में मदद मिल सकती है।
- निगरानी और मूल्यांकन: SHG कार्यक्रमों की नियमित निगरानी और मूल्यांकन चुनौतियों और सफलताओं की पहचान करने में मदद कर सकता है, जिससे उनके प्रभाव को बढ़ाने के लिए अनुकूल रणनीतियों की अनुमति मिलती है।

निष्कर्ष

स्वयं सहायता समूह महिलाओं के बीच आर्थिक आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो सशक्तिकरण और सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक का काम करते हैं। बचत, ऋण, प्रशिक्षण और सहायता नेटवर्क तक पहुँच प्रदान करके, 'भू' महिलाओं को आर्थिक भागीदारी में आने वाली बाधाओं को दूर करने और वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त करने में सक्षम बनाते हैं। 'भू' का प्रभाव व्यक्तिगत सशक्तिकरण से परे है, जो सामुदायिक विकास में योगदान देता है और पारंपरिक लैंगिक मानदंडों को चुनौती देता है। हालाँकि, उनकी क्षमता को अधिकतम करने के लिए, 'भू' के सामने आने वाली चुनौतियों का समाधान करना और महिलाओं के लिए स्थायी विकास और सशक्तिकरण को बढ़ावा देने वाली सहायक नीतियों को लागू करना आवश्यक है। जैसे-जैसे 'भू' आंदोलन विकसित होता जा रहा है, यह महिलाओं और उनके समुदायों के जीवन को बदलने का वादा करता है, और अधिक न्यायसंगत और समृद्ध भविष्य का मार्ग प्रशस्त करता है। आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन को आगे बढ़ाने के लिए एसएचजी की भूमिका महत्वपूर्ण है। इन समूहों में निरंतर निवेश, सहायक नीतियों और कार्यक्रमों के साथ, उनके प्रभाव को और बढ़ा सकते हैं, जिससे महिलाओं और उनके समुदायों के लिए अधिक न्यायसंगत और समृद्ध समाज बन सकता है।

संदर्भ:

- 1 चौधरी, एम. (2021). "गरीबी के चक्र को तोड़ना: महिला सशक्तिकरण में माइक्रोक्रेडिट की भूमिका." *जर्नल ऑफ डेवलपमेंट*

स्टडीज, 29(5), 50–60.

- 2 कुमार, आर., और पटेल, एस. (2020). "भारत में महिला सशक्तिकरण पर स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव" *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ जेंडर स्टडीज*, 12(2), 110–120।
- 3 मेहता, पी., और शर्मा, आर. (2022). "भारत में महिला उद्यमिता पर स्वयं सहायता समूहों का प्रभाव." *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप*, 19(1), 45–55.
- 4 रेड्डी, एल. (2019): "स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण: आंध्र प्रदेश में एक केस स्टडी" *जर्नल ऑफ रूरल डेवलपमेंट*, 37(1), 75–85.
- 5 स्मिथ, ए., और जॉनसन, बी. (2021): "माइक्रोफाइनेंस के माध्यम से महिलाओं को सशक्त बनाना: ग्रामीण विकास में स्वयं सहायता समूहों की भूमिका" *जर्नल ऑफ इकोनॉमिक डेवलपमेंट*, 15(3), 40–50।
- 6 वर्मा, टी. (2022). : "सामुदायिक विकास और महिला सशक्तिकरण: भारत में एसएचजी की भूमिका." *जर्नल ऑफ सोशल इश्यूज*, 18(4), 30–40.